सं श्रो वि । सोनीपत | 68-85 | 49606. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै । शंकर टैक्सटाईल मिल्ज, 41 | 4, बहालगढ़ रोड, सोनीपत, के श्रीमक श्री रमा शंकर, पुत्र देव नन्दन तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिवित्यम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं० 9641-1-श्रम/78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी श्रिधसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री रमा शंकर, पूल देव नन्दन की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है।

सं० ग्रो० वि०/सोनीपत/68-85/4) 613.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० शंकर टैक्सटाईल मिल्ज, 41/4, वहालगढ़ रौड, सोनीपत, के श्रमिक श्री बाबू लाल, पुत दुक्खी तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यताल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, भौद्योगिक विवाद भिधिनियम, 12 7, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिवितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस हे द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641—1-श्रम/78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रौहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेत् नीविष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्ध की तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामजा है या उक्त विवाद से मुनंगत या सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री बाबू लाल, गुत दुक बी की से गायों का समापन न्यायोचित तथा शिक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रधिसूचना की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मन्त में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त अवश्वकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उद्युत्त विवाद से मुसंगत या सम्बन्धित मामला है :--

नया श्री कमोद पुत्र मूल चन्द्र की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथों ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 9 दिसम्बर, 1985

सं. भ्रो.वि./श्रम्बाला/56-85/49926.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की रि. है कि 1. मुख्य प्रणासक हरियाणा अरवन डिवैलपमैंट अथार्टी चण्डीगढ़ 2. कार्यकारी अभियन्यता हुडा करनाल के श्रमिक श्री राकेश कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिणिय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44)84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, अस्वाला, को विवाद प्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिण्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला या उससे सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

कण श्री राकेंग कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथाठीक है? येदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?